

مِنْ أَصْحَابِ الْيَبِينِ ۹۰ فَسَلَّمَ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَبِينِ ۹۱ وَأَمَّا إِنْ

दहनी तरफ़ वालों से हो तो ऐ महबूब तुम पर सलाम है दहनी तरफ़ वालों से⁷⁵ और अगर⁷⁶

كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ۹۲ فَذُرُّهُ مِنْ حَيْمٍ ۹۳ وَتَصْلِيَةٌ

झुटलाने वालों गुमराहों में से हो⁷⁷ तो उस की मेहमानी खौलता पानी और भड़कती आग

جَحِيمٍ ۹۳ إِنَّ هَذَا هُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۹۴ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۹۵

में धंसाना⁷⁸ यह बेशक आ'ला दरजे की यकीनी बात है तो ऐ महबूब तुम अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो⁷⁹

﴿اياتها ۲۹﴾ ﴿سُورَةُ الْحَدِيدِ مَكِّيَّةٌ ۹۴﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ۴﴾

सूरए हदीद मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۱ لَهُ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है² और वोही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है उसी के लिये है

مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۲ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

आस्मानों और ज़मीन की सल्लतनत जिलाता है³ और मारता⁴ और वोह सब कुछ

قَدِيرٌ ۳ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۴ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

कर सकता है वोही अक्वल⁵ वोही आखिर⁶ वोही ज़ाहिर⁷ वोही बातिन⁸ और वोही सब कुछ

75 : मा'ना येह हैं कि ऐ सख्यिदे अम्बिया صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! आप उन का सलाम क़बूल फ़रमाएं और उन के लिये ग़मगीन न हों, वोह

अल्लाह तआला के अज़ाब से सलामत व महफूज़ रहेंगे और आप उन को उसी हाल में देखेंगे जो आप को पसन्द हो। 76 : मरने वाला

77 : या'नी अस्हाबे शिमाल में से 78 : जहन्नम की और मरने वालों के अहवाल और जो मज़ामीन इस सूत में बयान किये गए 79

हदीस : जब येह आयत नाज़िल हुई : "فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ" तो सख्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया इस को अपने रुकूअ में

दाखिल करो और जब "سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى" नाज़िल हुई तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाखिल करो। (ابوداؤد) मसअला : इस आयत से

साबित हुवा कि रुकूअ व सुजूद की तस्बीहात कुरआने करीम से माखूज़ हैं। 1 : सूरए हदीद मक्किय्या है या मदनिय्या, इस में चार 4 रुकूअ, उन्तीस

29 आयतें, पांच सो चवालीस 544 कलिमे, दो हज़ार चार सो छिहत्तर 2476 हर्फ़ हैं। 2 : जानदार हो या बेजान। 3 : मख्लूक को पैदा कर

के या येह मा'ना हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है 4 : या'नी मौत देता है ज़िन्दों को 5 : क़दीम, हर शै से क़ब्ल, अक्वले वे इब्तिदा कि वोह था और

कुछ न था। 6 : हर शै के हलाक व फना होने के बा'द रहने वाला, सब फना हो जाएंगे और वोह हमेशा रहेगा उस के लिये इन्तिहा नहीं। 7 :

दलाइल व बराहीन से या येह मा'ना कि ग़ालिब हर शै पर। 8 : हवास उस के इदराक से अज़िज़ या येह मा'ना कि हर शै का जानने वाला।

عَلَيْمٌ ۳ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ

जानता है वोही है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ⁶ दिन में पैदा किये⁹ फिर

اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ط يَعْلَمُ مَا يَلْجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَ

अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है¹⁰ और जो उस से बाहर निकलता है¹¹ और

مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَرْجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط وَ

जो आस्मान से उतरता है¹² और जो उस में चढ़ता¹³ और वोह तुम्हारे साथ है¹⁴ तुम कहीं हो और

اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ ۳ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَإِلَى

अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है¹⁵ उसी की है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत और अल्लाह

اللَّهُ تَرْجِعُ الْأُمُورَ ۗ ۵ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي

ही की तरफ़ सब कामों की रुजूअ रात को दिन के हिस्से में लाता है¹⁶ और दिन को रात के हिस्से

اللَّيْلِ ط وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۖ ۶ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ وَ

में लाता है¹⁷ और वोह दिलों की जानता है¹⁸ अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और

اٰنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ط فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ

उस की राह (में) कुछ वोह खर्च करो जिस में तुम्हें औरों का जा नशीन किया¹⁹ तो जो तुम में ईमान लाए और

اٰنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۙ ۷ وَمَالِكُمْ لَا تُوْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِ

उस की राह में खर्च किया उन के लिये बड़ा सवाब है और तुम्हें क्या है कि अल्लाह पर ईमान न लाओ हालां कि येह रसूल

يَدْعُوْكُمْ لِتُوْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اٰخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۙ ۸

तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ²⁰ और बेशक वोह²¹ तुम से पहले ही अहद ले चुका है²² अगर तुम्हें यकीन हो

9 : अय्यामे दुन्या से, कि पहला इन का यक शम्बा (इतवार) और पिछला जुमुआ है। हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि वोह अगर चाहता

तो तरफ़तुल ऐन (पलक झपकने) में पैदा कर देता लेकिन उस की हिकमत इसी को मुक्तजा हुई कि छ⁶ को अस्ल बनाए और इन पर मदार

रखे। 10 : ख़्वाह वोह दाना हो या क़तरा या ख़ज़ाना हो या मुर्दा 11 : ख़्वाह वोह नबात हो या धात या और कोई चीज़ 12 : रहमत व अज़ाब

और फ़िरश्ते और बारिश 13 : आ'माल और दुआएं। 14 : अपने इल्म व कुदरत के साथ उम्मून और फज़लो रहमत के साथ खुसूसन

15 : तो तुम्हें तुम्हारे हस्बे आ'माल जज़ा देगा। 16 : इस तरह कि रात को घटाता है और दिन की मिक्दार बढ़ाता है 17 : दिन घटा कर और

रात की मिक्दार बढ़ा कर 18 : दिल के अक़ीदे और क़ल्बी असरार सब को जानता है। 19 : जो तुम से पहले थे और तुम्हारा जा नशीन करेगा

तुम्हारे बा'द वालों को, मा'ना येह हैं कि जो माल तुम्हारे कब्जे में हैं सब अल्लाह तआला के हैं, उस ने तुम्हें नफ़ उठाने के लिये दे दिये हैं,

तुम हकीकतन उन के मालिक नहीं हो ब मन्ज़िला नाइब व वकील के हो, उन्हें राहे खुदा में खर्च करो और जिस तरह नाइब और वकील को

मालिक के हुक्म से खर्च करने में कोई तअम्मुल नहीं होता तो तुम्हें भी कोई तअम्मुल व तरहुद न हो। 20 : और बुरहानें और हुज्जतें पेश करते

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَىٰ

वोही है कि अपने बन्दे पर²³ रोशन आयतें उतारता है कि तुम्हें²⁴ अंधेरियों से उजाले की तरफ़

النُّورِ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۙ وَمَالِكُمْ إِلَّا تَتَّقُوا فَيُؤْتِي

ले जाए²⁵ और बेशक **अल्लाह** तुम पर ज़रूर मेहरबान रहम वाला और तुम्हें क्या है कि **अल्लाह** की राह में

سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ

खर्च न करो हालां कि आस्मानों और ज़मीन सब का वारिस **अल्लाह** ही है²⁶ तुम में बराबर नहीं

مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلَ ۗ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ

वोह जिन्होंने ने फ़तेह मक्का से क़बल खर्च और जिहाद किया²⁷ वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं

الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقْتِنَا ۗ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۗ وَاللَّهُ بِمَا

जिन्होंने ने बाद फ़तेह के खर्च और जिहाद किया और उन सब से²⁸ **अल्लाह** जन्नत का वादा फ़रमा चुका²⁹ और **अल्लाह** को

تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ۗ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعَّهُ

तुम्हारे कामों की ख़बर है कौन है जो **अल्लाह** को कर्ज़ दे अच्छा कर्ज़³⁰ तो वोह उस के लिये

لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۙ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ

दूने करे और उस को इज़्ज़त का सवाब है जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को³¹ देखोगे कि उन का नूर³²

نُورُهُمْ بَيِّنٌ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرُكُمُ الْيَوْمَ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ

उन के आगे और उन के दहने दौड़ता है³³ उन से फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़ियादा खुशी की बात वोह जन्नतें हैं जिन के नीचे

हैं और कितनाबे इलाही सुनाते हैं तो अब तुम्हें क्या उज़्र हो सकता है । 21 : या'नी **अल्लाह** तआला 22 : जब उस ने तुम्हें पुशते आदम

से निकाला था कि **अल्लाह** तआला तुम्हारा रब है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं । 23 : सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा

ﷺ पर 24 : कुफ़्रो शिर्क की 25 : या'नी नूरे ईमान की तरफ़ । 26 : तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क में रह

जाएंगे और तुम्हें खर्च करने का सवाब भी न मिलेगा और अगर तुम खुदा की राह में खर्च करो तो सवाब भी पाओ । 27 : जब कि मुसल्मान

कम और कमजोर थे, उस वक़्त जिन्होंने ने खर्च किया और जिहाद किया वोह मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिकोंने अब्वलीन हैं, उन के हक़

में नबिय्ये करीम ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना खर्च कर दे तो भी उन के एक मुद के

बराबर न हो न निस्फ़ मुद के । मुद एक पैमाना है जिस से जव नापे जाते हैं । शाने नुज़ूल : कल्बी ने कहा कि येह आयत हज़रते अबू बक्र

सिद्दीक رضی اللہ تعالیٰ عنہ के हक़ में नाज़िल हुई क्यूं कि आप पहले वोह शख्स हैं जो इस्लाम लाए और पहले वोह शख्स हैं जिस ने राहे खुदा

में माल खर्च किया और रसूले करीम ﷺ की हिमायत की । 28 : या'नी पहले खर्च करने वालों से भी और फ़तेह के बाद

खर्च करने वालों से भी 29 : अलबत्ता दरजात में तफ़ावुत है कबले फ़तेह खर्च करने वालों का दरजा आ'ला है । 30 : या'नी खुशदिली के

साथ राहे खुदा में खर्च करे, इस इन्फ़ाक़ को इस मुनासबत से कर्ज़ फ़रमाया गया है कि इस पर जन्नत का वा'दा फ़रमाया गया है । 31 : पुल

सिरात पर 32 : या'नी उन के ईमान व ताअत का नूर 33 : और जन्नत की तरफ़ उन की रहनुमाई करता है ।

تَحْتَهَا إِلَّا نَهْرٌ خَلِيدٌ فِيهَا ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾ يَوْمَ يَقُولُ

नहरें बहें तुम उन में हमेशा रहो येही बड़ी काम्याबी है जिस दिन मुनाफ़ि़क़

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَةُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا نَاتِقْتِيسٍ مِنْ تُوْرِكُمْ

मर्द और मुनाफ़ि़क़ औरतें मुसलमानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा ले

قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا ۖ فَضْرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُورٍ لَهُ

कहा जाएगा अपने पीछे लौटो³⁴ वहां नूर दूँडो वोह लौटेंगे जभी उन के³⁵ दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी³⁶ जिस में एक

بَابٌ ۖ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾

दरवाज़ा है³⁷ उस के अन्दर की तरफ़ रहमत³⁸ और उस के बाहर की तरफ़ अज़ाब मुनाफ़ि़क़³⁹

يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَ

मुसलमानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे⁴⁰ वोह कहेंगे क्यूं नहीं मगर तुम ने तो अपनी जानें फ़ितने में डालीं⁴¹ और

تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُمْ

मुसलमानों की बुराई तकते और शक रखते⁴² और झूटी तमअ ने तुम्हें फ़रेब दिया⁴³ यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया⁴⁴ और तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर

بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿١٣﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ

उस बड़े फ़रेबी ने मग़रूर रखा⁴⁵ तो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाए⁴⁶ और न खुले

كَفَرُوا ۗ مَا وَلَكُمْ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْبَصِيرُ ﴿١٥﴾ أَلَمْ يَأْنِ

काफ़िरों से तुम्हारा ठिकाना आग है वोह तुम्हारी रफ़ीक़ है और क्या ही बुरा अन्जाम क्या ईमान वालों को

لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۗ

अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस हक़ के लिये जो उतरा⁴⁷

34 : जहां से आए थे या'नी मौफ़ि़क़ की तरफ़ जहां हमें नूर दिया गया वहां नूर तलब करो या येह मा'ना हैं कि तुम हमारा नूर नहीं पा सकते, नूर की तलब के लिये पीछे लौट जाओ, फिर वोह नूर की तलाश में वापस होंगे और कुछ न पाएंगे तो दोबारा मोमिनीन की तरफ़ फिरेंगे ।

35 : या'नी मोमिनीन और मुनाफ़ि़कीन के 36 : बा'ज मुफ़स्सरीन ने कहा कि वोही आ'राफ़ है । 37 : उस से जन्मती जन्मत में दाखिल होंगे । 38 : या'नी उस दीवार के अन्दरूनी जानिब जन्मत 39 : उस दीवार के पीछे से 40 : दुन्या में नमाज़ें पढ़ते रोज़ा रखते 41 : निफ़ाक़ व कुफ़्र इख़्तियार कर के 42 : दीने इस्लाम में 43 : और तुम बातिल उम्मीदों में रहे कि मुसलमानों पर हवादिस् आएंगे वोह तबाह हो जाएंगे

44 : या'नी मौत 45 : या'नी शैतान ने धोका दिया कि अल्लाह तआला बड़ा हलीम है तुम पर अज़ाब न करेगा और न मरने के बा'द उठना न हिस्ाब, तुम उस के इस फ़रेब में आ गए । 46 : जिस को दे कर तुम अपनी जान अज़ाब से छुड़ा सको, बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि आज न तुम से ईमान कबूल किया जाए न तौबा । 47 शाने नुज़ूल : हज़रत उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ दौलत सराए अक़दस से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं ।

وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ

और उन जैसे न हों जिन को पहले किताब दी गई⁴⁸ फिर उन पर मुदत दराज हुई⁴⁹

فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿١٦﴾ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحِي

तो उन के दिल सख्त हो गए⁵⁰ और उन में बहुत फ़सिक हैं⁵¹ जान लो कि **اللَّهُ** ज़मीन को जिन्दा

الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾ اِنَّ

करता है उस के मरे पीछे⁵² बेशक हम ने तुम्हारे लिये निशानियां बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो बेशक

الْمُصَدِّقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَعْفُ لَهُمْ

सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वोह जिन्होंने **اللَّهُ** को अच्छा कर्ज़ दिया⁵³ उन के दूने हैं

وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ

और उन के लिये इज़्ज़त का सवाब है⁵⁴ और वोह जो **اللَّهُ** और उस के सब रसूलों पर ईमान लाएं वोही हैं

الصّٰدِقُونَ ۗ وَالشّٰهَدَاءُ عِنْدَ رَبّٰهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۗ وَ

कामिल सच्चे और औरों पर⁵⁵ गवाह अपने रब के यहां उन के लिये उन का सवाब⁵⁶ और उन का नूर है⁵⁷ और

الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١٩﴾ اَعْلَمُوا

जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतें झुटलाई वोह दोखी हैं जान लो

أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ زِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي

कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद⁵⁸ और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद

الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۗ كَشَلِّ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيْجُ

में एक दूसरे पर ज़ि़यादती चाहना⁵⁹ उस मीह की तरह जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा⁶⁰

फ़रमाया : तुम हंसते हो अभी तक तुम्हारे रब की तरफ़ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाज़िल हुई, उन्होंने ने अर्ज़

किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! इस हंसी का कफ़ारा क्या है ? फ़रमाया : इतना ही रोना । और उतरने वाले हक़ से मुराद कुरआने

मजीद है । 48 : या'नी यहूदो नसारा के तरीके इख़्तियार न करें । 49 : या'नी वोह ज़माना जो उन के और उन के अम्बिया के दरमियान था

50 : और यादे इलाही के लिये नर्म न हुए, दुन्या की तरफ़ माइल हो गए और मवाइज़ से उन्हों ने ए'राज़ किया 51 : दीन से ख़ारिज़ होने

वाले । 52 : मीह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर, बा'द इस के कि खुश्क हो गई थी, ऐसे ही दिलों को सख्त हो जाने के बा'द नर्म करता है और

उन्हें इल्मो हिकमत से ज़िन्दगी अता फ़रमाता है, बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि येह तम्सील है ज़िक्र के दिलों में असर करने की, जिस तरह

बारिश से ज़मीन को ज़िन्दगी हासिल होती है ऐसे ही ज़िक्रे इलाही से दिल जिन्दा होते हैं । 53 : या'नी खुशदिली और निर्यते सालेहा के साथ

मुस्तहिक़ीन को सदक़ा दिया और राहे खुदा में खर्च किया 54 : और वोह जन्त है । 55 : गुज़री हुई उम्मतों में से 56 : जिस का वा'दा किया

गया 57 : जो हश् में उन के साथ होगा । 58 : जिस में वक़्त ज़ाएअ करने के सिवा कुछ हासिल नहीं 59 : और इन चीज़ों में मशगूल रहना

فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا ۖ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ

कि तू उसे जर्द देखे फिर रौंदन (पामाल किया हुआ) हो गया⁶¹ और आखिरत में सख्त अज़ाब है⁶² और

مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَمَتَاعٌ الْعُرُورِ ۝٢٠

अल्लाह की तरफ से बख्शिश और उस की रिज़ा⁶³ और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोके का माल⁶⁴

سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَ

बढ़ कर चलो अपने रब की बख्शिश और उस जन्नत की तरफ⁶⁵ जिस की चौड़ाई जैसे आस्मान और

الْأَرْضِ ۗ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۗ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ

जमीन का फैलाव⁶⁶ तय्यार हुई है उन के लिये जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए यह अल्लाह का फज़ल है

يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝٢١ مَا أَصَابَ مَن

जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है नहीं पहुंचती कोई

مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ

मुसीबत ज़मीन में⁶⁷ और न तुम्हारी जानों में⁶⁸ मगर वोह एक किताब में है⁶⁹ कब्ल इस के कि

نَبَرَأَهَا ۗ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝٢٢ لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا

हम उसे पैदा करें⁷⁰ बेशक येह⁷¹ अल्लाह को आसान है इस लिये कि ग़म न खाओ उस⁷² पर जो हाथ से जाए और

تَقْرَحُوا بِآيَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝٢٣ الَّذِينَ

खुश न हो⁷³ उस पर जो तुम को दिया⁷⁴ और अल्लाह को नहीं भाता कोई इतरौना (मुतकब्बिर) बड़ाई मारने वाला वोह जो

और इन से दिल लगाना दुनिया है लेकिन ताअतें और इबादतें और जो चीजें कि ताअत पर मुअय्यन हों और वोह उमूरे आखिरत से हैं। अब इस जिन्दगानिये दुनिया की एक मिसाल इशाद फ़रमाई जाती है 60 : उस की सब्जी जाती रही पीला पड़ गया, किसी आफते समावी या अर्ज़ी से 61 : रेज़ा रेज़ा, येही हाल दुनिया की जिन्दगी का है जिस पर तालिबे दुनिया बहुत खुश होता है और उस के साथ बहुत सी उम्मीदें रखता है वोह निहायत जल्द गुज़र जाती है। 62 : उस के लिये जो दुनिया का तालिब हो और जिन्दगी लहवो लअब में गुज़ारे और वोह आखिरत की परवाह न करे, ऐसा हाल काफ़िर का होता है। 63 : जिस ने दुनिया को आखिरत पर तरजीह न दी। 64 : येह उस के लिये है जो दुनिया ही का हो जाए और उस पर भरोसा कर ले और आखिरत की फ़िक्र न करे और जो शख्स दुनिया में आखिरत का तालिब हो और अस्वाबे दुन्यवी से भी आखिरत ही के लिये अलाका रखे तो उस के लिये दुनिया की काम्याबी आखिरत का ज़रीआ है। हज़रते जुन्नून رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया कि ऐ गुयैहे मुरीदीन ! दुनिया तलब न करो और अगर तलब करो तो इस से महब्वत न करो, तोशा यहां से लो आराम गाह और है। 65 : रिज़ाए इलाही के तालिब बनो, उस की ताअत इख़्तियार करो और उस की फ़रमां बरदारी बजा ला कर जन्नत की तरफ़ बढ़ो 66 : या'नी जन्नत का अर्ज़ु ऐसा है कि सातों आस्मान और सातों ज़मीनों के वरक बना कर बाहम मिला दिये जाएं तो जितने वोह हों उतना जन्नत का अर्ज़ु, फिर तूल की क्या इन्तिहा। 67 : कहत की, इम्साके बारां (बारिश रुकने) की, अदमे पैदावार की, फ़लों की कमी की, खेतियों के तबाह होने की 68 : अमराज़ की और औलाद के ग़मों की 69 : लौहे महफूज़ में। 70 : या'नी ज़मीन को या जानों को या मुसीबत को 71 : या'नी इन उमूर का बा वुजूद कसरत के लौहे में सब फ़रमाना 72 : मताए दुनिया 73 : या'नी न इतराओ 74 : दुनिया का मालो मताअ, और येह समझ लो कि

يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ط وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ

आप बुखल करें⁷⁵ और औरों से बुखल को कहें⁷⁶ और जो मुंह फेरे⁷⁷ तो बेशक **अल्लाह** ही बे नियाज है

الْحَدِيدُ ۲۳ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَ

सब खूबियों सराहा बेशक हम ने अपने रसूलों को रोशन दलीलों के साथ भेजा और उन के साथ किताब⁷⁸ और

الْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ج وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ

अदल की तराजू उतारी⁷⁹ कि लोग इन्साफ़ पर काइम हों⁸⁰ और हम ने लोहा उतारा⁸¹ इस में सख़्त

شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَبْصُرُهَا وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ط

आंच⁸² और लोगों के फ़ापदे⁸³ और इस लिये कि **अल्लाह** देखे उस को जो बे देखे उस की⁸⁴ और उस के रसूलों की मदद करता है

إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۲۵ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي

बेशक **अल्लाह** कुव्वत वाला ग़ालिब है⁸⁵ और बेशक हम ने इब्राहीम और नूह को भेजा और उन की

ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوءَةَ وَالْكِتَابَ فِيهِمْ مُّهْتَدٍ ج وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۲۶

औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी⁸⁶ तो उन में⁸⁷ कोई राह पर आया और उन में बहुतेरे फ़ासिक हैं

जो **अल्लाह** तआला ने मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होना है, न ग़म करने से कोई जाए अशुदा चीज़ वापस मिल सकती है न फना होने वाली चीज़ इतराने के लाइक है, तो चाहिये कि खुशी की जगह शुक और ग़म की जगह सब इख़्तियार करो, ग़म से मुराद यहां इन्सान की वोह हालत है जिस में सब और रिज़ा ब क़ाए इलाही और उम्मीदे सवाब बाकी न रहे और खुशी से वोह इतराना मुराद है जिस में मस्त हो कर आदमी शुक से ग़ाफ़िल हो जाए और वोह ग़म व रन्ज जिस में बन्दा **अल्लाह** तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हो और उस की रिज़ा पर राज़ी हो ऐसे ही वोह खुशी जिस पर हक़ तआला का शुक गुज़ार हो मन्मूअ नहीं। हज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : ऐ फ़रजन्दे आदम ! किसी चीज़ के फुक़दान पर क्यूं ग़म करता है येह उस को तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यूं इतरता है मौत इस को तेरे हाथ में न छोड़ेगी। 75 : और राहे खुदा और उमरे खैर में खर्च न करें और हुकूके मालिय्या की अदा से कासिर रहें। 76 : इस की तफ़सीर में मुफ़स्सरीन का एक क़ौल येह भी है कि येह यहूद के हाल का बयान है और बुख़ल से मुराद उन का सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के उन औसाफ़ को छुपाना है जो कुतुबे साबिका में मज़कूर थे। 77 : ईमान से या माल खर्च करने से या खुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी से 78 : अहक़ाम व शराएअ की बयान करने वाली 79 : तराजू से मुराद अदल है मा'ना येह हैं कि हम ने अदल का हुक्म दिया और एक क़ौल येह है कि तराजू से वज़न का आला ही मुराद है। मरवी है कि हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** के पास तराजू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ौम को हुक्म दीजिये कि इस से वज़न करें 80 : और कोई किसी की हक़ तलफ़ी न करे। 81 : बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि उतारना यहां पैदा करने के मा'ना में है, मुराद येह है कि हम ने लोहा पैदा किया और लोगों के लिये मआदिन से निकाला और उन्हें इस की सन्भत का इल्म दिया और येह भी मरवी है : **अल्लाह** तआला ने चार बा बरकत चीज़ें आस्मान से ज़मीन की तरफ़ उतारी लोहा, आग, पानी, नमक। 82 : और निहायत कुव्वत कि इस से अस्लहा और आलाते जंग बनाए जाते हैं 83 : कि सन्भतों और हिरफ़तों में वोह बहुत काम आता है, खुलासा येह कि हम ने रसूलों को भेजा और उन के साथ इन चीज़ों को नाज़िल फ़रमाया कि लोग हक़ व अदल का मुआमला करें। 84 : या'नी उस के दीन की 85 : उस को किसी की मदद दरकार नहीं, दीन की मदद करने का जो हुक्म दिया गया येह उन्ही लोगों के नफ़अ के लिये है। 86 : या'नी तौरैत व इन्जील व ज़बूर और कुरआन 87 : या'नी उन की जुर्रियत में जिन में नबी और किताबें भेजीं।

ثُمَّ قَفَيْنَا عَلَىٰ أَثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ

फिर हम ने उन के पीछे⁸⁸ इसी राह पर अपने और रसूल भेजे और उन के पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा और उसे

الْإِنْجِيلَ ۗ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۗ وَ

इन्जील अता फ़रमाई और उस के पैरवों के दिल में नरमी और रहमत रखी⁸⁹ और

رَاهِبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ

राहब बनना⁹⁰ तो ये बात उन्होंने ने दीन में अपनी तरफ से निकाली हम ने उन पर मुकर्रर न की थी हां ये बिदअत उन्होंने ने **अल्लाह** की रिज़ा चाहने को पैदा की

فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۗ وَ

फिर उसे न निबाहा जैसा उस के निबाहने का हक़ था⁹¹ तो उन के ईमान वालों को⁹² हम ने उन का सवाब अता किया और

كَثِيرٌ مِنْهُمْ فُسِقُونَ ﴿٢٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا

उन में बहुतेरे⁹³ फ़ासिक हैं ऐ ईमान वाले⁹⁴ **अल्लाह** से डरो और उस के रसूल⁹⁵

بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تمشُونَ بِهِ

पर ईमान लाओ वोह अपनी रहमत के दो हिस्से तुम्हें अता फ़रमाएगा⁹⁶ और तुम्हारे लिये नूर कर देगा⁹⁷ जिस में चलो

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْلًا يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ إِلَّا

और तुम्हें बख़्शा देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है येह इस लिये कि किताब वाले काफ़िर जान जाएं कि

88 : या'नी हज़रते नूह व इब्राहीम **عَلَيْهِمَا السَّلَام** के बा'दे ता ज़मानए हज़रत ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** यके बा'दे दीगरे 89 : कि वोह आपस में एक दूसरे के साथ महबबत व शफ़क़त रखते । 90 : पहाड़ों और गा़रों और तन्हा मकानों में ख़ल्वत नशीन होना और सौमअ बनाना और अहले दुन्या से मुख़ालत (मेलजोल) तर्क करना और इबादतों में अपने ऊपर जाइद मशक़क़तें बढ़ा लेना, तारिक हो जाना, निकाह न करना, निहायत मोटे कपड़े पहनना, अदना गिज़ा निहायत कम मिक्दार में खाना 91 : बल्कि उस को जाएअ कर दिया और तस्लीस व इल्हाद में मुब्तला हुए और हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के दीन से कुफ़र कर के अपने बादशाहों के दीन में दाख़िल हुए और कुछ लोग उन में से दीने मसीही पर काइम और साबित भी रहे और जब ज़मानए पाक हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पाया तो हुज़ूर पर भी ईमान लाए । **मसअला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि बिदअत या'नी दीन में किसी बात का निकालना अगर वोह बात नेक हो और उस से रिज़ाए इलाही मक़सूद हो तो बेहतर है, उस पर सवाब मिलता है और उस को जारी रखना चाहिये, ऐसी बिदअत को बिदअते हसना कहते हैं, अलबत्ता दीन में बुरी बात निकालना बिदअते सय्यिआ कहलाता है, वोह मम्नूअ और ना जाइज़ है और बिदअते सय्यिआ हदीस शरीफ़ में वोह बताई गई है जो ख़िलाफ़े सुन्नत हो, उस के निकालने से कोई सुन्नत उठ जाए । इस से हज़रतहा मसाइल का फ़ैसला हो जाता है जिन में आज कल लोग इख़िलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए नफ़सानी से ऐसे उमूरे ख़ैर को बिदअत बता कर मन्अ करते हैं जिन से दीन की तक्वियत व तार्द होती है और मुसल्मानों को उख़वी फ़वाइद पहुंचते हैं और वोह ताआत व इबादात में ज़ौको शौक़ के साथ मशग़ूल रहते हैं, ऐसे उमूर को बिदअत बताना कुरआने मजीद के इस आयत के सरीह ख़िलाफ़ है । 92 : जो दीन पर काइम रहे थे 93 : जिन्होंने न रुहबानिय्यत को तर्क किया और दीने हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से मुन्हरिफ़ हो गए 94 : हज़रते मूसा व हज़रते ईसा पर **عَلَيْهِمَا السَّلَام** । येह ख़िताब अहले किताब को है, उन से फ़रमाया जाता है 95 : सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** 96 : या'नी तुम्हें दूना (दो गुना) अज़्र देगा क्यूं कि तुम पहली किताब और पहले नबी पर भी ईमान लाए और सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और कुरआने पाक पर भी । 97 : (पुल) सिरात पर ।

يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ

اللَّهُ ۗ اَللَّهُ کے فضل پر ان کا कुछ काबू नहीं⁹⁸ और येह कि फज़ल اَللَّهُ के हाथ है देता है

مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝٢٩

जिसे चाहे और अल्लह बड़े फज़ल वाला है

98 : वोह उस में से कुछ नहीं पा सकते न दूना अन्न न नूर न मग़िफ़रत, क्यूं कि वोह सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान न लाए तो उन का पहले अम्बिया पर ईमान लाना भी मुफ़ीद न होगा। शाने नुज़ूल : जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई और इस में मोमिनीने अहले किताब को सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के ऊपर ईमान लाने पर दूने अन्न का वा'दा दिया गया तो कुपफ़ारे अहले किताब ने कहा कि अगर हम हुज़ूर पर ईमान लाएं तो दूना अन्न मिले और अगर न लाएं तो एक अन्न जब भी रहेगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस खयाल का इब्ताल कर दिया गया।

